विषय : पारिस्थितिक स्वछता और समाज

मातृवात्सल्य स्वच्छ हाथों में

"भूमि एक ऐसी चीज़ है जो हम सबको है" यह महत्व निर्भर वाक्यों अमेरिकन कवि वेनडेल बेरी ने कहा गया है। इस भूमि, यानी हमारे भूमि की सबसे बड़ा विशेषता और तोहफा परिस्थिती है और पर्यावरण। परिस्थिति का अर्थ है हमारे आस पास सबकुछ, जैसे वायु, अग्नी, पानी आदी यह सबकुछ बस हमारा जीवन के लिए ज़रूरी नहीं है, पूरी जीवजन्तु का भी ज़रूरत है। भारतीय संस्कार के अनुसार जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है। जैसे एक माँ अपने सबकुछ देकर हमारा पालन पोषण करते है जैसे ही प्रकृति भी करते है।

आज के ज़माने में परिस्थिति को सही इज्ज़त और महत्व देनेवाले बहुत कम है इसिलिए पारिस्थितिक स्वछता आज एक बड़ा सवाल के तरह हमारे ऊपर खड़ा हो रहा है। जैसे हम अपने देश का अवकाशों का उपयोग करते है वैसे एक इनसान यानी इस धरती की बेटा या बेटी होने पर कई उत्तरदायित्वें भी है। अपनी माँ को सबसे खूबसूरत रखना हमारा फर्ज़ है। माँ तो मन से अतिसुन्दर है तभी तो इतना गन्धा करने के बाद भी वह हमे इतना प्यार

करता है। प्रकृति रो रहा है आज, वो भी हमारे वजह से। पुराने माँ कितनी खूबसूरत थी, बादल उसकी अभीषेक करती थी, खगवृंद उसकी स्तुतीपाठक थी, समुद्र उसकी करधनी थी हाँ, तभी तो हम उसको देवी पुकारती थी।

नई पीढ़ी को प्रकृति के साथ अपनापन महसूस नहीं होती क्योंकि हम अपना कोई चीज़ भी खराब न करती, जवान लोग से एक साल की बच्चे भी विज्ञान के पंखों में उड़ रहा है, उन्हें भूमि का आवाज़ न सुनाई देता है ना हि देख सकता है उसके लिए आँखों से नहीं मन से देखना चाहिए।

पारिस्थितिक प्रदूषण दीन भर बढ़ती जा रही है और सब हाथ में हाथ रखकर बैठ रहे हैं। कूडे कचरे, प्लास्टिक, युद्ध के वजह से कई केमिकल चीज़े भी परिस्थिति को खा रहा है। अगर हम अपनी परिस्थिति से प्यार नहीं करेंगे तो कौन करेंगे? हम सब इस मिट्टी से बनी हुई है, इसके ही सुरस सार से सनी हुई है अंत में निश्चल होने पर वो ही हमें अपनाएगी। तब क्या हम एक कूडेदान पर चले जाएगी? कोई नहीं सोचता ये सब।

"पर्यावरण दर्शन करने का जगह नहीं है वह हमारा घर है" प्रसिद्ध अमेरिकन कवि ग्यारी स्निडर ने कहा है ये। आज का ज़माना बिलकुल परिस्थिति को दर्शन करने का जगह समझा है इसलिए हम लोग अपने आप को 'समाज' कहने की लायक भी नहीं है। क्योंकि समाज तो उन लोग है जो प्रकृति का संरक्षण करते है। लेकिन अब भी हमारे पास समाज की दर्जा वापस पाने का वक्त है, 'कल सहि तो आज, आज सही तो अब' तो आज इसि वक्त हम परिस्थिति को दिल से अपनाकर प्यार करना शुरु करना चाहिए।

परिस्थिति तो क्षमामयी, वात्सल्यमयी और सर्वंसहा है। परिस्थिति तो इतना अच्छा अध्यापक है, क्योंकि इसकि एक महत्वपूर्ण सबक फूल हमें सिखाती है, और वही क्षमा की सबसे अच्छा निर्वचन है, 'एक फूल अगर हमारा हाथों से खराब भी करलो तब भी हमारा हाथ में महक ही वह देता है, वह ही है क्षमा'। ऐसे एक बच्चा अपने पहली अध्यापक और विद्यालय परिस्थिति को मानना चाहिए।

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 948 Participant Code: 318

पारिस्थितिक प्रदूषण का एक हिस्सा तो वैश्वीकरण के भी वजह से, समाज, विज्ञान के सहाय से बड़े बड़े कारखानों बना रहा है जो प्रकृति को बड़ा बोझ है। कारखानों अशास्त्रीय रूप में बनाकर मानव परिस्थिति का दुरुपयोग कर रहा है। युद्ध और ऐसी कारखानों का अशास्त्रीय निर्माण सिर्फ नाम का हि विकास ला सकता है क्योंकि उसकी परिणमफल सर्वनाश है।

बस अपनि हि राष्ट्र को नहीं जब भी हम कई जाते है वहीं भी हम साफ रखना चाहिए। कई वर्षों से पर्यावरण प्रदूषण का सज़ा हम भुगत रहे है। दो हज़ार अठारह का प्रलय केरल, तमिलनाडु, कर्णाटका आदि जगह में नाश बढ़ाया दो हज़ार चौबीस में वयनाड के चूरलमला में भी एक बड़ा हादसा हुआ था। इसका मतलब तो साफ है कि परिस्थिति चुप नहीं रहनेवाला, ऐसा कहा जाता है कि जो मालिन्य लोगों नदियों में फेंकाता वो प्रलय के समय वापस घरों में आ गया। प्रकृति समाज को सज़ा देना शुरु कर दिया है। पर्यावरण को कोई भी तरह से चोट पहुंचाने का परिणम अच्छा नहीं होगा।

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

पारिस्थिनिक मलिनीकरण में वायुमलिनीकरण भी एक चीज़ है, जिसकेवजह से दिल्ली में लाखों मर रहा है। पारिस्थितिक स्वछता आज का अवश्य है। एक स्वछ परिस्थिति में ही एक स्वछ मन का इनसान जन्म लेती है। एक स्वच्छ इनसान ही एक स्वच्छ समाज को बना सकती है। किसी और के बारे में नहीं पहला पड़ाव हमको ही लेना चाहिए और दूसरो को भी इस मार्ग में लाना चाहिए। नदियाँ जिसमे मछलियाँ साफ दिख सकता है, बादल और बरसात जो प्यार लेकर घूमता है, आकाश जिसमें ताज़ा हवा हो, रस्तायें जहाँ एक कूड़े भी ना हो, मानव जिसमें मनुष्यत्व और मानवीय मूल्यों भरा हो, एक ऐसी समाज, एक ऐसी केरल, एक ऐसी भारत और फीर एक ऐसी दुनिया बन जाये तो सबकुछ सही होगा।

"आज का पीढ़ी है कल का नेताओं" सौथ आफ्रिका का प्रेसिडेंड नेलसण मण्डेला का वाक्य है। हमारा प्रकृति को साफ रखने का यत्न में हमारा हाथों का ज़रूरत है प्लास्टिक का उन्मूलन, पेप्पर या कोटन बागों का इस्तमाल, कूड़े कचरे कूड़ेदान पर फैंकने का आदत आज इसी वक्त

शुरू करना चाहिए। प्रकृति का संसाधन उसकी दान है, इसका श्रद्धापूर्वक उपयोग करना चाहिए। बारिश का और अलग मौसमों का क्रमहीन आना भी कहीं न कहीं प्रदूषण का भी वजह से है।

पारिस्थितिक स्वच्छता की शिक्षण विद्यालयों से ही शुरु करना चाहिए। सही और गलत बच्चों को वहाँ से ही पता चल जाता है और घर से भी तो सब लोग मिलकर हमारे नया समाज को सिखाना चाहिए और खुद करकर भी दिखाना चाहिए। वायु हमारे लिए दुर्लभ हो रहा है इसलिए पेड़-पौधे को लगाना और पालना अवश्यक है। आफ्रीका का ओस्कर मिलनेवाला पहला व्यक्ती है वान्कारी मत्ताथी उसकी ग्रीनबेल्ट मूवमेंट प्रशस्त है इन लोगों ने सैंतीस लाख से ज्यादा पेड़ों को लगाया है। उसकी मार्ग सब को लेना चाहिए।

वेल्ड हेल्त ओरगनैसेशन के राय में 'हेल्त सामाजीक, शरीरीक और मानसीक अच्छाई है' तो हेल्त में स्वच्छता एक अनमोल चीज है। हमारा एक छोटा सा काम पूरी दुनिया को एक बड़ा पड़ाव होगा। तो इस

समाज का भाग होने पर हम अपने तरीके से प्रकृति को प्यार करना है। जिस धूल में हम सरक सरक कर घुटनों पर खड़ा होना सीखा है वही भूमि का संरक्षण के लिए उन्हे स्वच्छ रखना ज़रूरी है। अपनी गलतीयों सुधारकर वापस पर्यावरण के ओर मुड़कर उसे अपनाना और गले लगाना तो बनता है। गलत करना मानुषीक है लेकिन उस गलती को सही करना दैविक है। दिल की खिड़कियों और दरवाजा खुलकर माँ भूमि के लिए एक अच्छी बच्ची के तरह व्यवहार करना चाहिए। इंद्रधनुस की खूबसूरत वर्णों के जैसे हम इस दुनिया की सभी राष्ट्र की जनताओं मिलकर हमारा परिस्थिति को स्वच्छ बनाकर प्रकाशीत करेंगे। जैसे एक रंग के बिना इंद्रधनुस अधूरा है ठीक उसी तरह हर एक व्यक्ति के बिना पारिस्थितिक स्वच्छता अधूरा रहेगा।

एक समाज और बेटी होने का उत्तरदायित्व पूरी तरह निभाकर, परिस्थिति का हृदय को चोट से बचाकर, मानवीय का संदेश पूरी दुनिया को कंधों जोड़कर हाथ मिलाकर देनो आज ही शुरू करना है।